Dr. REETU RAJ

Assistant Professor

Department of HISTORY

RAJA SINGH COLLEGE SIWAN

(Jai Prakash University Chapra)

Lecture Notes on - **सिंधु घाटी सभ्यता के राजनीतिक एवं सामाजिक जीवन।** *(for TDC Part 1 HISTORY HONOURS)*

सिंधु घाटी सभ्यता के राजनीतिक एवं सामाजिक जीवन।

राजनीतिक जीवन

विश्व में राजनीतिक संगठन की प्रायः तीन प्रणालियों का उदय हुआ - राजतंत्र, धर्मतंत्र एवं प्रजातंत्र। इन्हीं में से किसी एक प्रणाली का प्रयोग सैंधव राजनीतिक जीवन में भी हुआ होगा।1946 ई. के बाद कि खोजो के आधार पर ऐसा माना जाता है कि सैंधव सभ्यता मे व्यापारिक कुलीन तंत्र ना होकर वहां एक शक्तिशाली केंद्रीय सरकार थी। लेकिन निश्चित साक्ष्य के अभाव में सैंधव राजनीतिक परिदृश्य का स्वरूप केवल अनुमान का विषय है। 'मैके' का मानना है कि हड़प्पा में प्रतिनिधि शासन था,जबकि विद्वान 'पिगॉट' के अनुसार यहाँ का शासन पुरोहित राजा के हाथों में था। परन्तु सिंधु सभ्यता से किसी भी मंदिर का साक्ष्य नहीं मिला है। अत: पिगॉट का मत स्वीकार्य नहीं है। डॉ. ए. एल. बाशम ने लिखा है "वास्तव में ऐसा प्रतीत होता है कि मिस्र और मेसोपोटामिया की सभ्यताओं की भांति हड़प्पा की सभ्यता एक धर्म राज्य पर आधारित थी।" परंतु कुछ विद्वानों का यह भी मानना है कि, सिंधु सभ्यता में जिस तरह सुनियोजित नगर योजना, एकरूप

लिपि, बाट-मापों की एकरूपता मौजूद है, हड़प्पा सभ्यता में एक राजनीतिक सत्ता अस्तित्व में थी और यह सत्ता वणिक वर्ग के हाथों में रही होगी। इस कारण यहां के शासन व्यवस्था के बारे में कोई निश्चित धारणा नहीं है। परंतु अधिकांशतया यह तो माना गया है कि यहां राजतंत्रीय व्यवस्था नहीं थी।

सामाजिक जीवन

हालांकि सिन्धु सभ्यता नगरीय सभ्यता थी, लेकिन पूर्णतः ग्रामीण जीवन पर आधारित थी। ग्रामों ने नगरों के सामाजिक सांस्कृतिक विकास में अहम् भूमिका निभाई। नगरों की योजना बनाते समय सामाजिक नियोजन का पूर्ण ध्यान रखा गया था। नगर नियोजन से विदित होता है कि सामुदायिक जीवन एवं जन स्वास्थय की आवश्कताओं का पूर्ण ध्यान रखा गया था। ऐसा प्रतीत होता है कि नगर के प्रशासन एवं व्यवस्था के लिए नगरपालिका जैसी कोई संस्था अस्तित्व में होगी। नगर व्यवस्था को देखकर ऐसा विदित होता है कि यहाँ सर्वाधिकारवादी शासनतन्त्र नहीं था। सिन्धु सभ्यता का समाज अनुशासित और प्रतिभा सम्पन्न था। सामाजिक

आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु समाज प्रशासकों, अधिकारियों, पुरोहितों, व्यापारियों, सौदागरों, दस्तकारों, श्रमिकों आदि में विभाजित था। धनादय लोग विशाल भवनों में रहते थे, जबकि श्रमिक लोग छोटे छोटे मकानों में रहते थे।सभवत: परिवार समाज की प्राथमिक इकाई था। बड़ी संख्या में मातृदेवी/स्त्री मृणमूर्तियों के मिलने से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि समाज मातृसत्तात्मक था।

सिन्धु सभ्यता के लोग मांसाहारी एवं शाकाहारी दोनों थे। गेहूँ, चावल, घी,दूध एवं फलों के साथ साथ भेड़, बकरी, सूअर, मुर्गे और मछलियाँ उनका प्रिय व्यंजन थे। घर में बर्तन के रूप में मिट्टी एवं धातु के बने कलश, थाली, कटोरे, तश्तरी, गिलास एवं चम्मच प्रयोग करते थे।

रखते थे।कांस्य से निर्मित दर्पण काफी प्रचलित थी। आभूषण, सोना, चाँदी, ताँबा, चीनी मिट्टी और हड्डियों से निर्मित होते थे।नाक में आभूषण पहना जाता था या नहीं इसका कोई प्रमाण नहीं मिला है। गोलाकार मनकों से बना छः लड़ियों वाला कंगन कारीगरी का उत्कृष्ट नमूना है।

मनोरंजन के साधनों में मछली पकड़ना, शिकार करना, पशु-पक्षियों को आपस में लड़ाना, चौपड़, पासा खेलना आदि शामिल थे।नर्तक एवं नर्तकी की मूर्ति को देखने से नृत्य के प्रति लोगों की आसक्ति परिलक्षित होती है। मिट्टी के बने असंख्य खिलौने खुदाईयों से मिले हैं जो बच्चों के मनोरंजन के बात की पुष्टि करते हैं ।

हड़प्पावासियों को सीसे (Lead) का ज्ञान था। परन्तु इस धातु का केवल एक छोटा-सा प्याला मिला है। आटा पीसने की चक्की काठी के आकार की कंकरीले पत्थर की थी। मसाला पीसने के लिए सिल गोल पत्थर की बनी होती थी। बॉट सिलखड़ी, चूना पत्थर, स्लेट, जेस्पर आदि पत्थरों से निर्मित होते थे, जो पॉलिशयुक्त होते थे। सर्वाधिक सिलखड़ी के मिले हैं. हैमी के अनुसार छोटे बाँटों को द्विआधारी पद्धति और बड़े बाँटों को दशमलव व्यवस्था के आधार पर प्रयुक्त किया जाता था। काँसे और ताँबे के बने हुए तराजू मिले हैं। लम्बाई नापने के लिए सीपी पर बना केवल एक पैमाना मिला है। प्रकाश के लिए हड़प्पावासी पीपों का प्रयोग करते थे जिनमें वनस्पति तेल प्रयोग में लाया जाता था। यह उल्लेखनीय है कि उस

समय मोमबत्ती प्रयोग में लाई जाती थी।

शवों की अन्त्येष्टि संस्कार में तीन प्रकार के शवोत्सर्ग के प्रमाण मिले हैं -1.पूर्ण समाधिकरण में सम्पूर्ण शव को भूमि में दफना दिया जाता था। 2. आंशिक समाधिकरण में पशु पक्षियों के खाने के बाद बचे शेष भाग को भूमि में दफना दिया जाता था। 3. दाह संस्कार में शव को पूर्ण रूप से जला कर उसकी भस्म को भूमि में गाड़ा जाता था। हड़प्पा दुर्ग के दक्षिण-पश्चिम में स्थित कब्रिस्तान को एच० (h) कब्रिस्तान का नाम दिया जाता है। लोथल में प्राप्त एक कब्र में शव का सिर पूर्व गैर पश्चिम की ओर एवं शव शरीर करवट लिए हुए लिटाया गया है। यहीं से एक कत्र में दो शब आपस में लिपटे हुए मिले हैं। सुरकोटदा से अण्डाकार शव के अवशेष मिले हैं। रूपनगर (रोपड़) की एक कब्र में मालिक के साथ कुत्ते के भी अवशेष मिले हैं।

References: Internet & Competitive books.